सार्वदेशिक परिषद् का पुनर्गठन

इस दौरान दो-चार नहीं बल्कि सैंकड़ों शिविर देश के विविध प्रान्तों व क्षेत्रों में लगाकर **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्** ने अपनी खण्ड-खण्ड हुई शक्ति को सोत्साह बटोरना शुरू किया और वह अपने इस उद्देश्य में सफल रही। १९७८ के पश्चात् **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्** को पुनर्गठित करने में जिन युवा साथियों की महनीय भूमिका रही उनमें प्रमुख रहे हैं सर्वश्री विरजानन्द, डा. सुभाष आर्य, प्रो. वीरेन्द्र, जयवीर आर्य, रामनिवास आर्य, शिवराम विद्यावाचस्पति, सूर्यदेव योगाचार्य, सन्तराम आर्य, आचार्य राजकुमार, डा. शीश राम, जयप्रकाश आर्य, रामपाल शास्त्री, महेन्द्र शास्त्री, विश्वबन्धु शास्त्री, रामकुमार आर्य, अतर सिंह आर्य, ओमप्रकाश आर्य, रामचन्द्र छत्रपति, सत्यवीर आर्य पेंटर, सत्यपाल आर्य, वेदपाल आर्य, आचार्य यशपाल, अजीत सिंह एडवोकेट, कर्मवीर आर्य, जोरा सिंह आर्य, दयानन्द आर्य, सतवीर आर्य, महेन्द्र शास्त्री, रणवीर सिंह आर्य, डा. धर्मवीर, महेशचन्द्र आर्य। ये सभी बन्धु हरयाणा के निवासी हैं। राजस्थान के सहयोगी बन्धुओं में सर्वश्री धर्मवीर आर्य पत्रकार, ब्र. दयावीर, महेन्द्र सिंह एडवोकेट, ओमप्रकाश आर्य के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। पंजाब के सहयोगियों में प्रमुख नाम ओमप्रकाश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, बृजेन्द्रमोहन आर्य, यशवन्तराय साथी, तरसेमलाल आर्य, रूपलाल शर्मा, सुदेश कुमार आर्य के हैं। उत्तर प्रदेश में संगठन को पुनः खड़ा करने में स्वामी ओ३मवेश जी के अलावा धनकुमार, विक्रमसिंह, हरपाल सिंह, शिवकुमार, ब्र. रामफल आर्य, आचार्य गजेन्द्र, डा. वीरेन्द्र, विनय विद्यालंकार, वीरपाल आर्य, शिवराज शास्त्री, गोविन्द सिंह, डा. अमरसिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसी तरह मध्य प्रदेश में रुद्रप्रकाश पाण्डेय, महाराष्ट्र में प्रदीप शास्त्री, उड़ीसा में आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, योगेन्द्र उपाध्याय और आन्ध्र प्रदेश में दयानन्द आर्य का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।